श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर

डुँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर शहर के माणक चौक में सड़क के किनारे पर स्थित है। सूत्रों के अनुसार (श्रवण परम्परा के अनुसार) दावड़ा परिवार के श्री सांवलदास दावड़ा ने इस मंदिर को वि.सं. 1526 में निर्माण कराया गया जो उस समय के राजघराने के प्रमुख मंत्री थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

श्री ऋषभदेव भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1889 का लेख है।

ऐसा बताया गया है कि प्रारम्भ में धातु की प्रतिमा थी।

मुगल आक्रमण के समय में मुगल शासकों ने स्वर्ण मुर्ति समझ तोड़कर ले गए। बाद में श्वेत पाषण की प्रतिमा की प्रतिष्ठा वि.सं. 1889 माघ सुदि 10 बुधवार आचार्य जयरत्न सुरि तत्पट्टे आचार्य श्री शांतिसागर म.सा. महारावल दलपत सिंह के राज्य में करवाई।

परिकर पांच धातु का बना हुआ है। बहुत लम्बा होने के वास्तविक नाप नहीं लिया गया। लेकिन परम्परा के अनुसार 2½ गुणा लम्बा (ऊँचा) व 1½ गुणा चौड़ा बना हुआ है।

परिकर पर वि.सं. 1529 का लेख है जिसमें प्रतिष्ठा आचार्य श्री रत्नसिंह सूरि जी द्वारा करने का उल्लेख है।

इस धातु के परिकर की विशेषता है : इस परिकर में 14 स्वप्न, 9 ग्रह, 8 मंगल, 72 तीर्थंकर (भूत, वर्तमान व भावी चौबीसी) की प्रतिमाओं के साथ-साथ यक्ष दक्षिणी की मूर्तियां है।

मूलनायक के बाईं ओर :

(1) श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है इस पर वि. सं. 1899 फाल्गुन सुदि 2 का लेख है।

(2) श्री अजितनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 1889 (1899) का लेख है।

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 1889 का लेख है।

दाईं ओर :

(4) श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। सम्भवतया सं. 1757 का है।

(5) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषान की 11'' ऊँची प्रतिमा है इस पर सं. 1889 फाल्गुन सुदि 2 का लेख है।

(6) श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है इस पर सं. 1757 चैत्र वदि 6 का लेख है।

दोनों ओर आलिओं में (बाईं ओर) :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की कलात्मक स्फटिक की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

स्फटिक मूर्ति

दाईं ओर (प्रवेश के समय बाईं ओर)

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

इसी आलिए में (नीचे)

(1) श्री वासुपूज्य भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1751 का लेख है

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री पार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

बाहर आलिओं में :

श्री आदिनाथ भगवान धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है (दाएं)

श्री कुंथुनाथ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

मध्य वेदी पर (रंगमण्डप में) :

श्री पार्श्वनाथ भगवान की धातु की 23'' ऊँची प्रतिमा है। (बीच में)

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्रतिमा है (बाएं) इस पर पर सं. 1501 का लेख है

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। (दाएं) इस पर सं. 1505 वैशाख सुदि 11 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान की चरण पादुका श्याम पाषाण के पट्ट 17''X17'' पर है। इस पर अपठनीय लेख है। (सम्भवतया 1797 का लेख है)

श्री सिद्धचक्र यंत्र श्याम पाषाण के पट्ट 21''X21'' पर बना है। इस पर अपठनीय लेख है।

बाएं : (कारनिस पर)

श्याम पाषाण के पट्ट पर

(1) श्री चौबीस तीर्थंकर है

(2) श्री नंदीश्वर द्वीप है

भूत, वर्तमान व भावी, चौबीसी के तीर्थंकर की माताएं बाल्यावस्था के रूप में अपने पुत्र को गोद मे लिए हुए ।

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

दाईं ओर : (कारनिस पर)

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है

बाएँ :

श्रेयांसनाथ भगवान की धातु की पंच तीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1555 वैशाख सुदि 3 का लेख है

बाईं ओर :

श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1505 वैशाख सुदि 3 का लेख है

श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अठनीय लेख है केवल 16... पढ़ने पर आता है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर 1874 (1674) का लेख है।

श्री श्याम पट्ट पर तीनों (भूत, वर्तमान व भविष्य) चौबीस तीर्थंकर बने हुए है।

श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

रंगमण्डप के गुम्बज कलात्मक व चित्रकारी से ओतप्रोत है।

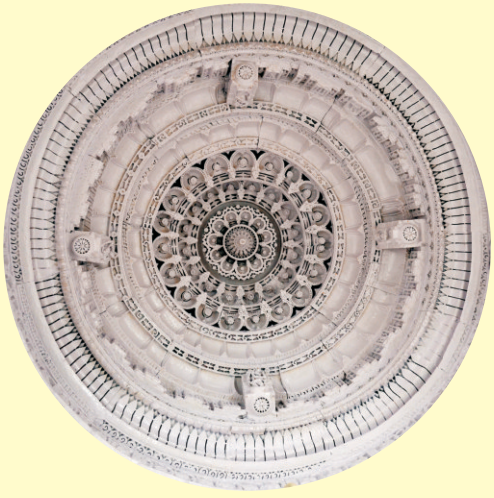

बाहर :

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1636 का लेख है।

श्री पद्मप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1636 का लेख है।

सभामण्डप में कुल 9 कलात्मक तोरण बने हुए है तथा सभा मण्डप के बीच की देहरी के ऊपर कलात्मक तोरण बना हुआ है।

बावन जिनालय परिसर :

(1) श्री पद्मनाभ भगवान (भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर) का श्वेत पाषाण की 47'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1815 शाके 1680 का लेख है।

(2) श्री नमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2039 श्रावण शुक्ला 10 का लेख है।

(3) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(4) श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

(5) श्री वासुपूज्य भगवान की श्याम पाषाण की 9 '' ऊँची प्रतिमा है ।

(6) श्री शीतलनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री अभिनंदन भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

(8) श्री श्रेयांस नाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है।

ये उक्त सभी प्रतिमा श्याम पाषाण की है व सभी पर किसी–किसी पर 1889 व किसी पर 1888 का लेख है।

बड़ी देवरी में :

(9) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

(10) श्री पद्मप्रभ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(11) श्री आदिनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(11) श्री विमलनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(12) श्री सम्भवनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(13) श्री वासुपूज्य भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(14) श्री मल्लिनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(15) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(16) श्री पद्मप्रभ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(17) श्री धर्मनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(18) श्री विमलनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(19) श्री आदीश्वर भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(20) श्री अनंतनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(21) श्री कुथुनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

(22) श्री शीतलनाथ भगवान की 9/10'' ऊँची प्रतिमा है।

ये सभी प्रतिमाएं 9 या 10' ऊँची है व सभी प्रतिमा पर किन्ही पर सं. 1889 व किन्हीं पर 1899 का लेख है।

पीछे की ओर – बड़ी देहरी में :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 23' व परिकर सहित 41'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' व परिकर तक 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' व परिकर तक 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(1) श्री चंद्रप्रभ भगवान की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2502 का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2502 का लेख है।

बाहर दोनों ओर :

श्री गरूड़ यक्ष की श्याम पाषाण की ऊँची प्रतिमा है।

श्री निर्वाणी देवी (यक्षिणी) की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री चौमुखा जी श्वेत पाषाण का बना हुआ है इस पर सं. 1529 का लेख है जिसमें मुनि सुंदरसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठा का उल्लेख है।

(24) श्री ऋषभदेव (25) श्री अजितनाथ (26) श्री सुमतिनाथ

(27) श्री आदिनाथ (28) श्री अरनाथ (29) श्री अजितनाथ

(30) श्री मुनिसुव्रत (31) श्री श्रेयासनाथ (32) श्री पार्श्वनाथ (33) श्री अनंतनाथ

इन सभी प्रतिमाओं पर किसी पर 1889 या 1899 का लेख उत्कीर्ण है तथा श्याम पाषाण की है। इसके साथ साथ कोई 18'' व कोई 17'' ऊँची है।

बड़ी देवरी में :

(1) श्री नमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री शांतिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (बाएं)

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की धातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है (बाएं)

(4) श्री महावीर भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है (दाएं)

(5) श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 9'' ऊँची प्रतिमा है। (दाएं)

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं :

श्री शांतिनाथ भगवान की चतुविंशति 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1705 ज्येष्ठ सुदि.....का लेख है।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान की चतुर्विंशति 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1512 का लेख है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री नमिनाथ की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 माह सुदि 5 का लेख है।

श्री चंद्रप्रभ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 माह सुदि 5 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2044 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख है।

श्री शांतिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख है।

श्री महावीर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री मुनिसुव्रत भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1495 का लेख है।

श्री बीस स्थानक यंत्र 9'' X 7'' का है। इसपर सं. 2051 का लेख है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 3.5'' का है।

श्री त्रिकोण यंत्र 4'' ऊँचाई का है।

श्री अष्टमंगल यंत्र 5.5 X 3.5'' का है। इस पर 2051 फाल्गुन सुदि प्रतिपदा का लेख है।

बाहर :

(1) श्री माणिभद्र यक्ष की श्वेत पाषाण की 16'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

दीवार पर काँच में सम्मेतशिखर जी, अष्टापद, शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ पट्ट लगे है।

श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है ।

श्री महावीर भगवान की प्रतिमा है।

श्री अभिनंदन भगवान की प्रतिमा है।

श्री सुविधिनाथ भगवान की प्रतिमा है।

श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा है।

श्री नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा है।

बड़ी देहरी में :

श्री सुविधिनाथ भगवान (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1659 का लेख है।

श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। इस पर सं. 1541 का लेख है।

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1674 वैशाख वदि 13 का लेख है।

श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1889 का लेख है।

गर्भगृह के सामने, प्रवेश द्वार के ऊपर :

(1) श्याम पाषाण का हाथी है। जिस पर तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की माता श्री मरूदेवी सवार (श्याम पाषाण की) है।

हाथी के पीछे :

श्री पुण्डरीक स्वामी की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2030 ज्येष्ठ सुदि 10 का लेख है।

प्रवेश के समय दोनों ओर :

(1) श्री अधिष्ठायक देव 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(2) श्री गणेश की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

प्रवेश द्वार से भीतर जाते समय दाईं ओर एक लेख लिखा है जिसका सारांश यह है :

वि.सं. 1526 में महारावल श्री सोमदास के राज्य में बीसा हुमड़ समाज द्वारा प्रतिष्ठा श्री रत्नसूरि जी, उदयवल्लभसूरिजी के शिष्य श्री ज्ञान सागर सूरि जी ने कराई। उसके बाद सं. 1889 माघ शुक्ला 10 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। जिनालय, ध्वजा दण्ड एवं बिम्बों की प्रतिष्ठा वैशाख शुक्ला 3 की आचार्य श्री माणिक्यसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

अंतिम प्रतिष्ठा वि.सं. 2051 फाल्गुन शुक्ला 3 को आचार्य श्री विजयदेवसूरिजी, हेमचद्रंसूरि जी श्री ज्ञान सागरसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठा कराई।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा फाल्गुन शुक्ला 3 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर बीसा हुमड़ द्वारा संचालित श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर जिनालय संघ द्वारा की जाती है। मंदिर के साथ दुकानें व उपाश्रय होना चाहिए।

सम्पर्क सूत्र : श्री पूरणमल जी दावड़ा- 09414104706, श्री महेश जी दावड़ा, 09413118428

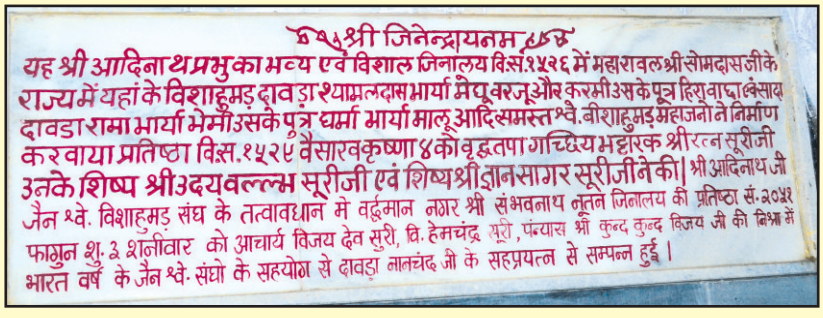

मंदिर में कलात्मक मुर्तियां

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर
डूँगरपुर

यह शिखर बंद मंदिर शहर के फौज बड़ला मोहल्ला में स्थित है। सूत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि यह मंदिर 300 वर्ष प्राचीन है। सुत्रों ने यह भी बताया है कि यह मंदिर ओसवाल परिवार द्वारा बनवाया गया था, वह परिवार कौन था ज्ञात नहीं, वर्तमान में नगर में ओसवाल परिवार के कम ही सदस्य है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की पीत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि.सं. 1917 का लेख है।

(2) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1917 का लेख है।

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्याम पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1917 का लेख है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ :

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्विशंति 8'' ऊँची है।

(2) श्री पार्श्वनाथ भगवान की चतुर्विशंति 4.5'' ऊँची प्रतिमा है।इस पर सं. 1578 का लेख है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1751 का लेख है।

(4) श्री जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1746 का लेख है।

(5) श्री सिद्धचक्रयंत्र चाँदी के पतरे पर 6'' गोलाकार है। इस पर सं. 2051 का लेख है।

(6) श्री सिद्धचक्रयंत्र चाँदी के 2.7'' गोलाकार है।

(7)(8) श्री चांदी के यंत्र 4'' X 3'' व 3'' X 2'' के है।

(9) देव–देवी की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

(10) से (12) श्री यंत्र तीन है।

(13) व (14) श्री यंत्र ताम्बा के दो है।

(15) श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

बाहर :

श्री भैरव की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है

श्री गणेश की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर सभा मण्डप में :

श्री सम्मेत शिखरजी, शत्रुंजय, गिरनार तीर्थ के पट्ट है।

दरवाजे के ऊपर :

चरण–पादुका 10'' X 10'' श्याम पाषाण पट्ट पर स्थापित है। इसके किनारे वि.सं. 1917 शाक 1782 का लेख है। दरवाजे के बाहर श्याम पाषाण के हाथी है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक पूर्णिमा को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख – श्री जैन श्वेताम्बर बीसा हुमड़ द्वारा संचालित श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर जिनालय संघ द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री पूरणमल जी दावड़ा – 09414104706

श्री महेश जी दावड़ा – 09413118428

श्री वासुपूज्य जिनालय (श्वे.) – चम्पापुरी

श्री गम्भीरा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, डूँगरपुर

यह शिखरबंद मंदिर डूंगरपुर शहर के पुराने मोहल्ले में घाटी पर स्थित है। मंदिर के द्वार पर मंदिर शालाशाह द्वारा निर्मित होने का समय सं. 1312 वीर सं. 1782 का लेख लिखा हुआ। इस मंदिर की विशेषता यह है कि मंदिर का शिखर पवेरा पत्थर से बना हुआ है। मंदिर के गर्भगृह रंगमण्डप में काँच की जड़ाई की हुई है।

16 सोलह स्तम्भों पर भी काँच की जड़ाई का कार्य किया हुआ है। कलात्मक तोरण बने हुए है।

डूंगरपुर राज्य के राजा (महारावल) गोपीनाथ व उसके पुत्र सोमदास (समय वि.सं. 1483) थे। उस समय शालाशाह जैन ओसवाल वंश के मंत्री थे। वे शूरवीर, कर्मवीर, दानवीर थे। उनके शासन काल में डुंगरिया नामक उद्‌ण्डी भील रहता था। आस-पास के प्रदेश उसके अधीन थे।

डुंगरिया उद्‌ण्डी होने के कारण वह छोटे-मोटे उपद्रव किया करता था यहां तक शालाशाह की सुंदर कन्या से विवाह करने का प्रस्ताव कर दिया और शालाशाह के मना करने पर उसने जबरन ले जाने की घोषणा कर दी। ऐसे समय में शालाशाह ने विवेक के आधार पर दो माह का समय मांग कर महारावल की सहायता से डुंगरिया भील को मार दिया।

मरणोपरांत उसकी दोनो पत्नियां धनी व काली सती हुई। जिसकी छतरिया आज भी पहाड़ी पर विद्यमान है। इस पहाड़ी को धन माता की पहाड़ी कहा जाता है। स्थानीय लोगों की भी यही मान्यता है डूंगरिया भील के नाम से डुंगरपुर बसा है।

महारावल गोपीनाथ व सोमदास का गद्दीनशीन का समय वि.सं. 1483 से 1536 तक का था, इनके समय काल की गणना से सं. 1312 में निर्मित होना मेल नहीं खाता ।

यह घटना महारावल वीरसिंहदेव के समय की है। महारावल वीरसिंह देव की गद्दीनशीनी का भी समय वि.सं. 1343-1344 माना गया है। यह समय भी मंदिर निर्माण के समय से मेल नहीं होता है। अत: यह सम्भव है कि मंदिर शालाशाह के पूर्वजों ने बनवाया हो ।

बड़वों की ख्यात के आधार पर महारावल वीरसिंह देव का समय कहीं पर सं. 1315 कहीं 1335 कहीं 1359 का लिखा है। डूंगरिया भील को मार कर डूंगरपुर बसाया और राजधानी बनाई। वि.सं. 1415 में महारावल डूंगरसिंह तो वीरसिंह देव का पौत्र था। प्राय: राजा महाराजा अपने ही नाम से नगर की स्थापना करते थे जैसे - उदयपुर, जयपुर, जोधपुर आदि।

इसी प्रकार से यह सम्भव है कि डूंगरसिंह ने अपने नाम से डुंगरपुर नगर बसाकर राजधानी बनाई हो। यह भी स्पष्ट है बड़ौदा (वटपद्र) की राजधानी वि.सं. 1359 तक होना निश्चित है। उसके बाद का कोई प्रमाण नहीं मिलता। ख्यात को सही माने तो सं. 1312 का समय वीरदेव सिंह का समय उचित प्रतीत होता है।

डूंगरपुर किसने बसाया कब बसाया यह विषय मेरे विषय सामग्री का नहीं हैं। मंदिर निर्माणकर्ता का नाम व समय को लेकर स्पष्ट किया है।

शालाशाह की प्रसिद्धि व ख्याति के कारण स्व ग्राम में विशाल मंदिर का कार्य प्रारंभ किया लेकिन उनकी मृत्यु हो जाने से पूर्ण नहीं हो सका। वर्तमान में वहां एक छोटा शिव मंदिर है।

सूत्रों के अनुसार शालाराज ने जीर्णोद्धार कराया । सं. 1525 में शालाराज ने आंतरी में जैन मंदिर का निर्माण कराया । शालाराज शालाशाह के वंशज है । अत: महारावल वीरसिंहदेव के समय में मंदिर निर्माण होकर प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई ।

यह संभव है कि उस समय प्रचलन परम्परा के आधार पर ख्यात पर अधिक महत्व दिया जाता था और महारावल वीरदेवसिंह का 1315 बताया गया तो यह संभव है मंदिर का निर्माण वि.सं. 1312 में हुआ हो जो सत्य प्रतीत होता है ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 11'' नाग तक 15'' परिकर तक 35'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 1964 चैत्र वदि (प्रतिपदा) का लेख है।

मूलनायक के दाएं :

(2) श्री अजितनाथ भगवान की धातु की 13'' मय परिकर तक 33'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री संभवनाथ की धातु की 13'' व परिकर तक 33'' ऊँची प्रतिमा है।

मूलनायक के बाएँ :

(4) श्री सुमतिनाथ भगवान की धातु की 13'' परिकर तक 33'' ऊँची प्रतिमा है।

(5) श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा हे।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ :

(1) बीस स्थानक यंत्र 9'' का गोलाकार है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र चांदी का 5'' गोलाकार है।

(3) से (6) श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'', 5'' 4'' एवं 4.5'' का गोलाकार है।

(7) श्री अष्ट मंगल यंत्र 6'' X 3'' का है।

नीचे :

श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की है।

रंग मण्डप का गुम्बज कलात्मक है ।

दोनों ओर आलिओ में (रंगमण्डप में) :

दाएँ :

(1) श्री अजितनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची है।

(2) श्री सिद्धचक्र यंत्र तांबा का 13'' X 10'' का है।

(3) श्री ऋषि मण्डल यंत्र तांबा का 17'' X 14'' का है।

बाएँ :

(1) श्री श्रेयांसनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची है।

(2) श्री जिनेश्वर भगवान की चतुर्विशंति धातु की 13'' ऊँची है।

(3) श्री जिनेश्वर भगवान चतुर्विशंति 11'' ऊँची प्रतिमा है।

(श्री वागड़ वीशा पोरवाल जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक महासंघ डूंगरपुर की पारिवारिक दिग्दर्शिका के पृष्ठ 105) के अनुसार भी महारावल वीरसिंह देव की गद्दीसीनी वि.सं. 1339 में मानी है। लेकिन बड़ौदा में राजधानी होने का उल्लेख जिसमें महारावल वीरसिंहदेव का नाम

आता है जो एक शिलालेख में उत्कीर्ण है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि बड़ौदा से राजधानी 1359 तक थी उसके बाद कोई लेख उपलब्ध नहीं हुआ।

गर्भगृह के बाहर आलिओं में (बाएँ) :

श्री मुनिसुव्रत भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री आदिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री सिद्धचक्र यंत्र तांबा का 16'' X 12'' का है

श्री पार्श्वनाथ यंत्र तांबा का 16'' X 12'' का है

श्री सिद्धचक्र यंत्र तांबा का गोलाकार 25''का है (भूमि पर) रंगमण्डप में

श्री शांतिनाथ भगवान की धातु की 13'' ऊँची प्रतिमा है। (कारनिस पर)

श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 3'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 21'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है।

श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1705 का लेख है। देवी को देव ने ऊपर उठा रखा है।

श्री पद्मावती देवी की श्याम पाषाण की 15' ऊँची प्रतिमा है। देवी को देव उपर उठा रखा है।

श्री पद्मावती देवी धातु की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

श्याम पाषाणी पट्ट पर भूत, वर्तमान व भावी चौबीसी के तीर्थंकर (बाल्यावस्था) के शिशु के रूप में गोद में लिए तीर्थंकर की माताएं का बना है।

सरस्वती देवी की धातु की प्रतिमा है। इस पर सं. 1453 का लेख है।

नव चौकी में :

बाहर दोनों ओर आलिओं में (गोखड़े में)

(1) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है इस पर श्री विजयदेवसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1905 का लेख है।

बावन जिनालय परिसर मार्ग :

एक प्राचीन शिलालेख सं. 1671 वर्षे वैशाख वागड़ देशे का लेख है।

(1) समवसरण पट्ट श्वेत पाषाण का श्री ऋषभानन, चंद्रानंन श्री वर्धमान श्री वारिषेण विहरमान का है। प्रतिष्ठा होना शेष है।

(2) श्याम पट्ट 27'' X 20'' पर वर्तमान चौबीसी के तीर्थंकर प्रतिमा उत्कीर्ण है।

परिसर में :

(1) श्री सहस्त्राफणा पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(2) श्री महावीर भगवान की पीत पाषाण 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(3) श्री चंद्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्राचीन प्रतिमा है। यह प्रतिमा 40 वर्ष पूर्व नागेश्वर तीर्थ से लाई गई।

बड़ी देवरी में :

(4) श्री केसरियाजी (मूलनायक) श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

श्री सम्भवनाथ भगवान की (दाएं) श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर 1905 का लेख है। (बाएं)

(5) श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(6) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(7) श्री नवफणा पार्श्वनाथ की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

श्री आदिनाथ भगवान के चरण–पादुका 17'' X 17'' के पट्ट पर है। इस पर सं. 1982 का लेख है।

(8) पार्श्वनाथ भगवान का समवसरण श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

श्री सिद्धचक्रयंत्र श्याम पाषाण का 16'' गोलाकार है।

बड़ी देवरी में (रंग मण्डप में)

29 देवरिया (आलिऐ में) बनी है जिनमें निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

(1) श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(2) श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(3) श्री गणेश जी म. श्याम पाषण की प्रतिमा है।

(4) खाली

(5) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(6) श्री सुविधिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(7) श्री संभवनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(8 से 12) खाली

(13) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(14) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(15) श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की खड़ी (काऊसग्गीय) प्रतिमा है।

(16) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(17) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(18 – 22) खाली

(23) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(24) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(25) श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

(26 – 27) खाली

(28) श्री गौमुखयक्ष श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

(29) श्री भैरव की श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

पुन: आगे :

(9) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(10) श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(11) श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(12) श्री मल्लिनाथ की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(13) श्री आदिनाथ भगवान की की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(14) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 1905 का लेख है।

(15) श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(16) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(17) श्री सिद्धचक्र यंत्र श्वेत पाषाण का 19''X19'' का है की प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

(18) श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(19) श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(20) श्री मुनिसुव्रत भगवान की श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है।

(21) श्री संभवनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

(22) श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

(23 एवं 24) श्री गौतम गणधर श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर 2040 का लेख है। एक स्तम्भ पर सं. 1795 शिवसिंह विजयराजे का लेख है।

(25) श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 37'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है। (काउसग्गीय)

(26) श्री माणिभद्रयक्ष की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

(27) श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

(28) श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

मंदिर के बाहर निकलते समय बाईं ओर श्री पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा है। यह प्रतिमा चमत्कारिक है। यह मुस्लिम बस्ती से घिरा हुआ है। कई वर्ष पूर्व इस प्रतिमा को कील लगाकर खुर्द–बुर्द करने का प्रयास किया। इस प्रकार का जघन्य व्यवहार किसने किया, जांच करने पर ज्ञात हुआ कि दो परिवार के बालको द्वारा यह कृत्य किया गया वे सभी बालक गम्भीर रूप से बीमार हो गए वे घर की आर्थिक स्थिति में अचानक परिवर्तन (कमजोर) होने लगे। जैनी श्रैष्ठि ने उन्हें क्षमा मांगने की सलाह दी। ऐसा करने पर बालक भी स्वस्थ हुए और व्यवसाय आदि में पुनः बढ़ोतरी होने लगी। तब से मुस्लिम समाज के सदस्य मंदिर की रखवाली भी करते है और नमन करते है।

इस घटना के बाद मंदिर को बाहर से जाली से बंद कर दिया है।

इस मंदिर में पांच पट्ट श्री गिरनार, नाकोड़ा, शिखरजी, शत्रुंजय व जैसलमेर तीर्थ के बने हुए है। मंदिर में एक भोयरा (तहखाना) है। यह भूतल के भीतरी भाग का मार्ग है जो महलों तक जाता है, ऐसा बतलाया गया है। महलों से महारानियों इसी मार्ग से आकर भगवान के दर्शन–वंदन करती थी।

इस मंदिर की 10 दुकानें है जो किराये पर दी गई है।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा कार्तिक सुदि 15 को चढ़ाई जाती है।

इस मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर बीसा पोरवाल सघ द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्री हेमेन्द्र भाई महता-09352794588 एवं श्री मोहित जी महता-941402345

- **तीर्थंकर ओघो मुंहपत्ति नहीं रखते हैं-समवायांग सूत्र**
- **गौतम स्वामी मुंहपत्ति नहीं बांधते थे - विपाक सूत्रे-दुःख विपाक**
- **विक्रम संवत् 1708 में लवजी स्वामी ने मुंहपत्ति बांधने की प्रथा चलाई है।**